रिंडा

भारत की गौरवशाली देशी गोवंशीय विरासत

प्रस्तावना

भारत की धरती पर गोवंश की अनेक विशिष्ट नस्लों ने सदियों से अपनी अलग पहचान बनाई है। उनके इतिहास, उत्पत्ति, स्वरूप, गुण और उपयोग का विवरण पुरानी पुस्तकों, सरकारी रिपोर्टों, सर्वेक्षणों तथा अन्य ऐतिहासिक स्रोतों में बिखरा हुआ है।

यह संकलन उसी प्रामाणिक ऐतिहासिक सामग्री को एक स्थान पर प्रस्तुत करने और हिंदी पाठकों के लिए सरल एवं सुगम बनाने का प्रयास है। इसमें भारतीय गोवंश के इतिहास, पहचान और विशेषताओं से संबंधित जानकारी को मूल स्रोतों के आधार पर प्रस्तुत किया गया है।

यह संकलन किसी नस्ल का आधुनिक वैज्ञानिक मूल्यांकन नहीं, बल्कि ऐतिहासिक स्रोतों में दर्ज उसके स्वरूप, विशेषताओं और इतिहास को आज के पाठक तक पहुँचाने का एक विनम्र प्रयास है।

॥ मातरः सर्वभूतानां गावः सर्वसुखप्रदाः ॥

मूल स्रोत
पुस्तक: Indigenous Breeds of Cattle in Rajputana
लेखक: Major F. S. H. Baldrey
प्रकाशन वर्ष: 1911

पुस्तक की ऑनलाइन PDF प्रति: | www.surbhisewa.com

अनुवाद संबंधी सूचना

यह हिंदी पाठक संस्करण कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) की सहायता से तैयार किया गया है। किसी तथ्य अथवा अनुवाद में अंतर पाए जाने पर संबंधित मूल पुस्तक को ही अंतिम और प्रमाणिक स्रोत माना जाए।

रिंडा गोवंश

मूल स्रोत: मेजर एफ. एस. एच. बाल्ड्रे, राजपूताना के स्वदेशी गोवंश, 1911

बागरी से संबंध और क्षेत्र

लेखक लिखता है कि इस नस्ल से संबंधित लगभग सभी बातें बागरी नस्ल से मिलती हैं, लेकिन रिंडा पशु उससे काफी छोटे और कम उपयोगी हैं। रिंडा पशु धौलपुर, ग्वालियर और थोड़ी संख्या में टोडा रायसिंह में पाए जाते थे। टोडा रायसिंह में उनका प्रजनन नहीं होता था, वहाँ उन्हें बाहर से लाया जाता था। वास्तविक प्रजनन क्षेत्र 'अजमेरा' नामक भू-भाग बताया गया है, अर्थात उदयपुर से लगा हुआ क्षेत्र।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 33 | पीडीएफ पृ. 53.

नाम का अर्थ और सामान्य आकार

मूल स्रोत में 'रेंडा' नाम का अर्थ 'साधारण या कम आकर्षक रूप वाला' बताया गया है। पशु अपेक्षाकृत छोटे होते थे और कुकुद के पीछे उनकी ऊँचाई लगभग 50 इंच बताई गई है।

रंग सामान्यतः चितकबरा होता था—सफेद रंग के साथ दूसरे रंग के बड़े धब्बे दिखाई देते थे।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 33 | पीडीएफ पृ. 53.

सिर, माथा, चेहरा और कान

सिर विशिष्ट, छोटा, मोटा, चौड़ा और भारी बताया गया है। माथा खुरदरा और उभरा हुआ है तथा आँखों के ऊपर की अस्थियाँ भी स्पष्ट रूप से उभरी हुई दिखाई देती हैं।

चेहरा नीचे की ओर सिकुड़ते हुए एक स्पष्ट थूथन पर समाप्त होता है। ऊपरी होंठ महीन है। कान लंबे और लटकते हुए हैं; जड़ के पास उनका ऊपरी किनारा भीतर की ओर मुड़कर कान में चला जाता है, जिससे निचला किनारा अधिक उभरा हुआ दिखाई देता है। लेखक इसे नस्ल की पहचान का एक विशेष लक्षण मानता है।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 33 | पीडीएफ पृ. 53.

सींग, गर्दन, कुकुद और धड़

सींग छोटे और मोटे हैं तथा ऊपर की ओर मुड़ते हैं। गर्दन छोटी, गलकम्बल छोटा और कुकुद भी छोटा है; कुकुद शरीर पर अपेक्षाकृत पीछे स्थित होता है।

कंधे छोटे हैं और छाती का माप भी तुलनात्मक रूप से कम है। पीठ छोटी और कमर ढीली बताई गई है। अगले पैर सीधे हैं, पिंडली की हड्डी पतली है और खुर छोटे तथा सघन हैं।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 33 | पीडीएफ पृ. 53.

पिछला भाग, पूँछ और पैर

पिछला भाग सुडौल है। पूँछ अच्छी तरह लगी हुई है और पिछले जोड़ से थोड़ा नीचे महीन बालों के गुच्छे पर समाप्त होती है। पिछले पैर अच्छे आकार के हैं और लिंगावरण छोटा है।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 33 | पीडीएफ पृ. 53.

रिंडा गाय

गाय पर भी यही सामान्य शारीरिक वर्णन लागू होता है, लेकिन उसकी गर्दन सामान्यतः कुछ लंबी और पैर अधिक महीन होते हैं। गायों को कम दूध देने वाली बताया गया है।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 33 | पीडीएफ पृ. 53.

रिंडा सांड (Renda Bull)

सोत: मेजर एफ. एस. एच. बाल्ड्रे, राजपूताना के स्वदेशी गोवंश, 1911

(Plate XVII)

आयु: 3 वर्ष • स्थान: टोंक के पास

"स्पष्टता के लिए चित्र को रंगीन किया गया है।"

राजपूताना में सामान्य उपयोग और पहचान

रिपोर्ट रिंडा को राजपूताना में सामान्य रूप से मिलने वाला गोवंश बताती है। यह अलवर और जयपुर राज्यों में तथा पूर्व की ओर रेवाड़ी तक पाया जाता था। पशु छोटे और बहुत महत्वपूर्ण नहीं माने जाते थे, लेकिन घूमंतू व्यापारियों और छोटे कृषकों द्वारा इनका व्यापक उपयोग होता था।
लेखक इनकी तुलना संयुक्त प्रांत और पंजाब में 'देसी' कहे जाने वाले सामान्य गोवंश से करता है। नस्ल का बेहतर रूप टोंक, धौलपुर और ग्वालियर की दिशा में पाया जाता था।
लोग इन्हें इसलिए पसंद करते थे क्योंकि ये सस्ते थे, आसानी से खिलाए जा सकते थे और लगभग हर प्रकार के काम में उपयोगी थे।
स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 33 | पीडीएफ पृ. 53.

स्वभाव और काम करने की प्रकृति

लेखक इनके कामकाजी स्वभाव को बहुत अनुकूल नहीं बताता। इन्हें काम में उदासीन, आलसी और कभी-कभी परेशान करने वाला कहा गया है; कुछ पशु खराब स्वभाव वाले और लड़ने तक को तैयार हो जाते थे।
रिपोर्ट में ऐसे उदाहरणों का उल्लेख है जिनमें 2 या 3 पशुओं ने तेंदुए के हमले का मुकाबला किया।
इसके बावजूद ये कम आहार पर अच्छी तरह टिक जाते थे। इन्हें हल, गाड़ी, कुएँ, सामान ढोने और अन्य धीमे कामों में लगाया जाता था। छोटे पैर और मजबूत खुरों के कारण इन्हें पहाड़ी काम के लिए विशेष रूप से उपयुक्त बताया गया है।इनकी चाल धीमी थी और गति सामान्यतः लगभग 1½ मील प्रति घंटा, अर्थात लगभग 2.4 किमी प्रति घंटा से अधिक नहीं होती थी।
स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 34 | पीडीएफ पृ. 54.

रिंडा गोवंश की मूल माप-तालिका

मूल रिपोर्ट में सभी माप इंच में दिए गए हैं। तालिका में 1 सांड और 1 गाय के माप दर्ज हैं।

पशु	ऊँचाई	शरीर लंबाई	छाती घेरा	पिंडली घेरा	पिंडली लंबाई	सींग	चेहरा	माथा	आयु	रंग
रिंडा सांड 53	49	51	60	6½	7	7	20	8½	7	सफेद
रिंडा गाय 53	47	52	60	6½	7	7	20	7	6	सफेद

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 35 | पीडीएफ पृ. 55.

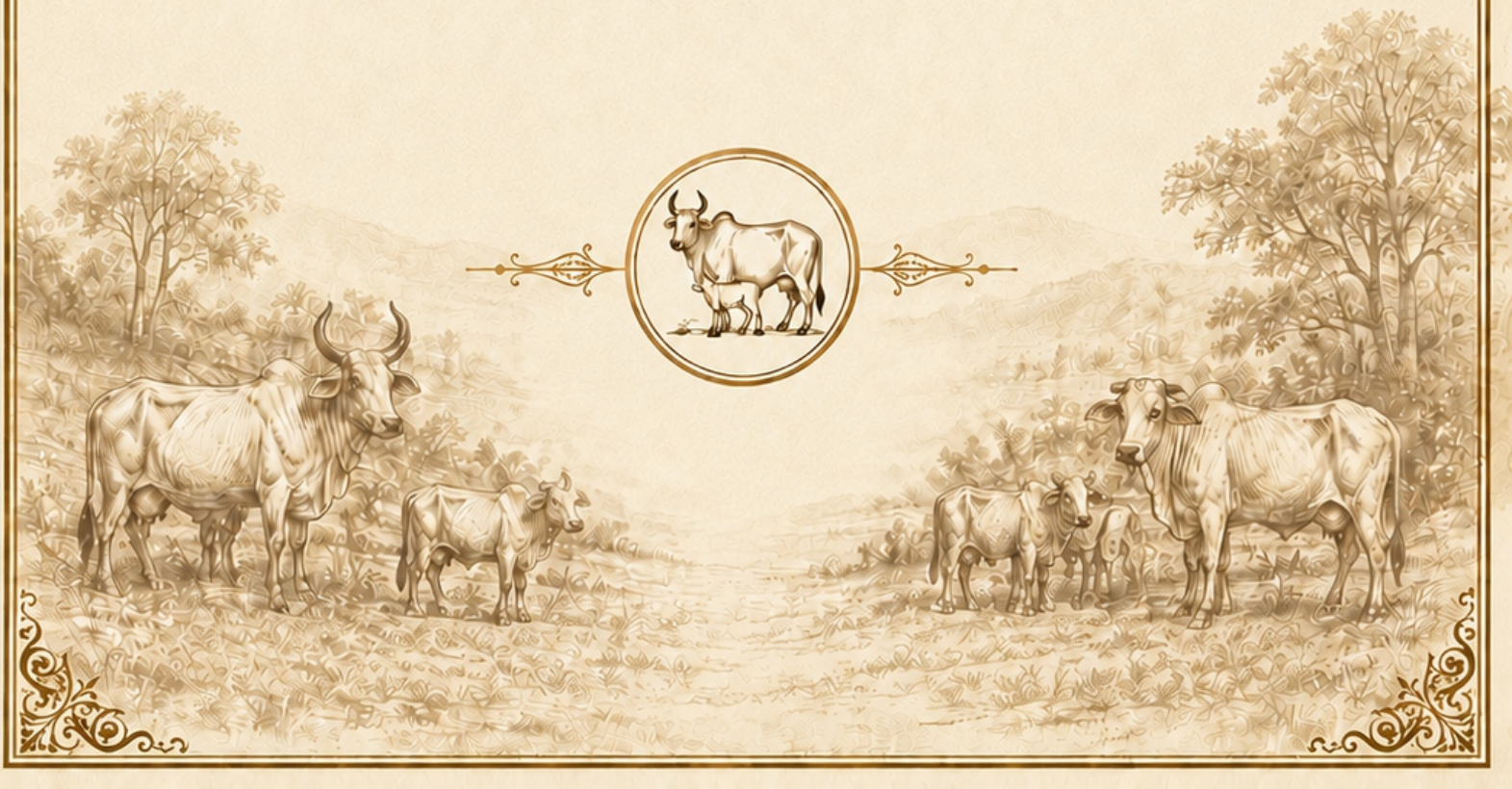

माँ है, शब्दों से नहीं,
आँखों से बोलती है।
इसके सीने पर अपना कान लगाओ तो सही।
हर धड़कन में दुलार है,
कुछ देर तुम भी इससे बतलाओ तो सही।
तुम्हारे हर दर्द को अपने में समेट लेगी,
बस माँ कहकर इससे लिपट जाओ तो सही।
गौ माता राष्ट्रमाता
सेवा करें
संरक्षण करें
संवर्धन करें
www.surbhisewa.com